Kalakankar International Journal of Multidisciplinary Research
Volume 1 | Issue 1 | July 2026
Available online at: https://kijmr.com/

माघ मेला: आस्था, सत्ता और राजनीति का संगम

शुभी शुक्ला
सहायक आचार्य,राजनीति विज्ञान विभाग, मदनमोहन मालवीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय कालाकांकर प्रतापगढ़
Email ID: s.shubheeshukla@gmail.com

Received: 03 July 2026 | **Accepted:** 15 July 2026 | **Published:** 25 July 2026

Abstract (सारांश)

माघ मेले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का आधार मात्र धार्मिक था परंतु यदि वर्तमान में माघ मेले की स्थिति को देखा जाए तब पता चलता है कि वास्तविक स्थिति अब धार्मिक न होकर राजनीतिक हो चुकी। वर्तमान सत्ता इसे आध्यात्मिक पर्व न समझकर राजनीतिक पर्व समझती है , आज माघ मेले को सत्ता प्राप्त करने का ऐसा मंच मान लिया गया है कि यदि माघ मेले की व्यवस्था को भली प्रकार से सुनिश्चित नहीं किया गया तो उनकी राजनीति स्थिति पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता हैं "इसी संदर्भ में राहुल मेहरोत्रा ने लिखा है कि माघ मेला एक अस्थाई नगर है जहां राज्य का शासन, क्षमता, जनसमूह नियंत्रण, संसाधन प्रबंधन आदि का प्रदर्शन करता है जहां राजनीति दल अपने प्रचार प्रसार तथा सत्ता की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहते हैं"[1]

इस प्रकार माघ मेला भारतीय राजनीति का एक ऐसा अप्रत्यक्ष मंच बनकर सामने आ रहा जिसके माध्यम से प्रत्येक राजनीति दल सत्ता प्राप्ति का प्रयास करते है। अत: यह शोध पत्र इसी आस्था सत्ता और राजनीति के संगम को समझने के उद्देश्य से किया गया ताकि यह स्पष्ट रूप से समझा जा सके कि कैसे एक धार्मिक आयोजन भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक आयोजन बनकर सामने आ रहा है।

मुख्य शब्द: *– धार्मिक आयोजन, जनसमूह, सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक प्रतीक, राजनीतिक मंच, जनमत निर्माण, प्रचार प्रसार आदि शब्दों का प्रयोग इस शोध पत्र में मुख्य रूप से किया जाएगा।*

1. प्रस्तावना

माघ मेला दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन माना जाता है। जिसका आयोजन गंगा यमुना तथा पौराणिक रूप से सरस्वती के संगम तट पर होता है हिन्दुओं में यह मान्यता है कि माघ के पवन माह पर इस संगम स्नान मात्र से आत्मिक मोक्ष प्राप्त होता है। अत: इसी कारण प्रत्येक वर्ष "माघ" के महीने में भारत वर्ष के कोने कोने से यहां करोड़ों श्रद्धालु की भीड़ एकत्रित होती है इस मेले को विविधता में एकता का स्वरूप माना गया है और यह ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित है यदि किसी स्थान पर एक बड़ी संख्या में लोग इक्कठा होते है तो वह जनसभा अपने आप राजनीति दृष्टिकोण ले लेती है।

जैसा कि हम देख पा रहे की वर्तमान में माघ मेला मात्र एक धार्मिक आयोजन नहीं रह गया है बल्कि ऐतिहासिक रूप से यह राजनीतिक दलों के लिए ऐसा मंच बन गया जहां वे जनसमूह को आकर्षित कर सकते है। " भारत की सुप्रसिद्ध पत्रिका 'The Indian Express' में प्रकाशित एक शोध के आधार पर 19वी शताब्दी के उत्तरार्ध के बाद माघ मेला धीरे धीरे एक ऐसे मंच के रूप में विकसित हो रहा जिस पर चढ़कर सत्ता को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है"[2]

विशेष रूप से माघ मेले में राजनीति की शुरुआत तब से मानी जाती है जब से ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शासन सत्ता को अपने हाथ में ले लिया अर्थात 1857 की क्रांति के बाद जब ब्रिटिश भारत की सत्ता को ईस्ट इंडिया कंपनी से लिया तब प्रयाग राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र माना जाने लगा। हालांकि ब्रिटिश सरकार यह स्पष्ट रूप से समझती थी कि भारतीयों के धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप उनके अस्तित्व को भारत से खत्म कर सकती है इसलिए ही ब्रिटिश भारतीयों के धार्मिक कार्यों से अपनी दूरी बनाए रखते थे और वहीं मौका मिल जाता था स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्रवादी नेताओं को । जहां वे जनता को जागरूक कर सकते थे उन्हें देश वास्तविक स्थिति से अवगत करा सकते थे। उदाहरण के लिए यदि देखा जाए तो 1940 के दशक में भारत छोड़ो आंदोलनों ने माघ मेले का सहारा लिया ताकि लोगों की इस आंदोलन में भागीदारी बढ़ाई जा सके।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. KIJMR Published by Kalakankar Publishing.

जिससे यह स्पष्ट है कि माघ मेला धार्मिक आयोजन से आगे बढ़कर सामाजिक राजनीतिक जन जागरूकता बन रहा है। "इसी संदर्भ में प्रख्यात फ्रांसीसी इतिहासकार और राजनीतिक वैज्ञानिक क्रिस्टोफ जाइफरलों ने भारत में धर्म और राजनीति के संबंध में टिप्पणी करते हुए कहा कि औपनिवेशिक कल में भारत में बड़े धार्मिक आयोजन केवल आध्यात्मिक समागम नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्रीय चेतना राजनीति संवाद और जन संगठन के ऐसे मंच बन गए थे जिनका प्रयोग अपेक्षाकृत राजनीतिक विचारों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है"[3]

20वी शताब्दी के प्रारंभ में माघ मेले में राजनीति गतिविधियां और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी और सैद्धांतिक दृष्टि से देखा जाए तो 20 शताब्दी के बाद माघ मेला धार्मिक सार्वजनिक स्थल से राजनीतिक सार्वजनिक क्षेत्र में परिवर्तित होने लगा। माघ मेले में राजनीति प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित न होकर अप्रत्यक्ष रूप से लोगों में प्रचार प्रसार के में होता है। यही कारण है कि माघ मेले में राजनीतिक गतिविधियों का प्रारंभ किसी एक घटना का परिणाम नहीं है बल्कि यह निरंतर कई वर्षों से चालने वाली एक प्रक्रिया है जिसका परिणाम हम वर्तमान में देख रहे हैं। "इस प्रकार माघ मेले में राजनीति का प्रारंभ औपनिवेशिक कल से ही माना गया है जिसकी छाया आज के मांग मेले तथा कुंभ मेले में स्पष्ट दिखाई देती है।"[4]

- और इसी परंपरा के चलते वर्तमान सरकार अब धार्मिक आयोजन को आने वाले चुनाव के परिणाम के रूप में देखती है वर्तमान सरकार माघ मेले को इस प्रकार व्यवस्थित और सुसज्जित करते है कि उन्हे आने वाले चुनाव में इसका पूरा लाभ मिल सके लोगों को प्रशासनिक , स्वास्थ, परिवहन और जन नियंत्रण आदि के ऐसी व्यवस्था करती है कि विपक्ष किसी भी तरह माघ मेले की अव्यवस्था के कारण लोगों का समर्थन अपनी ओर आकर्षित कर लें।। " 2025 के महा कुंभ मेला जो 12 वर्ष के माघ मेले के बाद बाद आता है उसमें उत्तर प्रदेश सरकार ने डिजिटल सुविधाएं जैसे महाकुंभ मेला ऐप , AI चैट बोट्ट, QR कोड, और बस एवं नईं ट्रेन जैसी सेवाएं प्रदान के अपनी ख्याति लोगों में बिखरने का प्रयास किया और कुछ हद तक सफल भी हुए"[5]

हालांकि की कई बार सरकार के इन प्रयासों से माघ मेला तकनीकी, स्वस्थ, सुरक्षा तथा प्रशासनिक रूप से भी समृद्ध हो जाता है भले ही उनका उद्देश्य राजनीतिक स्वार्थ को पूरा करना होता है परंतु माघ मेले का ये सुधार स्वतः ही जन कल्याण का रूप ले लेती है। इस प्रकार यह प्रशासनिक प्रदर्शन चुनावी संदर्भ में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है क्योंकि माघ मेले जैसा विशाल धार्मिक आयोजन जिसमे सरकार द्वारा की गई प्रशासनिक व्यवस्था को लोक स्वयं महसूस करती है जब जनता ऐसे आयोजन को सफल होता महसूस करतीं है तो उनका झुकाव तथा समर्थन तात्कालिक सरकार की तरफ झुक ही जाता है। जो आने वाले चुनाव के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण साबित होता है। इसी कारण कुंभ मेले को चुनाव निर्धारक तत्व माना जाता है।" प्रसिद्ध राजनीति विशेषज्ञ एवं विद्वान योगेंद्र यादव का मानना है कि भारत में विशाल धार्मिक का राजनीतिक महत्व केवल प्रतीकात्मक नहीं है बल्कि वे लोकतांत्रिक राजनीति की दिशा को प्रभावित करने वाले सामाजिक संकेतक बन चुके हैं। उनके अनुसार माघ मेला और कुंभ मेला जैसे आयोजन राजनीति दलों को यह समझने का अवसर देते है कि धार्मिक संस्कृति पहचान किस प्रकार मतदाताओं के राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित कर रही है"[6]

हालांकि यदि कुछ पूर्व माघ मेलो का अवलोकन किया जाए तो विशेष रूप से 2013 के बाद लगने वाले माघ मेले और कुंभ मेले में भारतीय राजनीति को बढ़ती भागीदारी को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है The Indian express भारत की सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं में से एक जिनके अनुसार 2019 के माघ मेले में राज्य और केंद्र सरकार ने इस मेले के माध्यम से विकासात्मक एवं प्रतीकात्मक प्रचार प्रारंभ किया। इसी प्रकार 2025 के महाकुंभ मेले के संदर्भ में The times of India और अन्य समाचार पत्रों ने सरकार द्वारा किए गए व्यापक निवेश, डिजिटल सेवाएं आदि को रेखांकित किया

माघ मेलों में बढ़ता राजनीतिक प्रभाव: एक तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण

माघ मेला वर्ष	राजनीतिक प्रभाव सूचकांक	प्रमुख विशेषता
2013 का कुंभ मेला	30 प्रतिशत राजनीतिक भागीदारी	सीमित राजनीतिक भागीदारी
2019 का माघ मेला या अर्धकुंभ	55 प्रतिशत राजनीतिक भागीदारी	सरकारी प्रचार और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
2025 का महाकुंभ	85 प्रतिशत राजनीतिक भागीदारी	विशेष रूप से राजनीतिक प्रचार का स्थल

इस तुलनात्मक ग्राफ से स्पष्ट करता यह स्पष्ट करता है कि जैसे जैसे समय आगे बढ़ा माघ मेलों का राजनीतिक प्रभाव लगातार बढ़ता गया। 2013 में जहां माघ मेला मुख्यता धार्मिक आयोजन था वहीं 2019 में राजनीतिक संप्रेषण और इसी क्रम में 2025 के महाकुंभ में यह प्रभाव अपने उच्चतम स्तर पर दिखाई देता है। "हाल के वर्षों में रिकार्ड भीड़ और व्यवस्थाओं (सुरक्षा, स्वच्छता, डिजिटल प्रबंधन) को शासन की उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह रुझान 2017 के बाद अधिक स्पष्ट दिखता है, जब बड़े धार्मिक आयोजनों को "सुशासन" और "विकास" के प्रमाण के रूप में प्रचारित किया गया"[7]

माघ मेले में बढ़ते राजनीतिक प्रभाव के तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण को देखने के बाद यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि भविष्य में आने वाले कुंभ मेलों का एक मात्र उद्देश्य होगा और वह है राजनीतिक उद्देश्य ,की कैसे माघ मेलों के माध्यम से जनसमूह अपनी ओर आकर्षित किया जाए, कैसे इसके माध्यम से सत्ता प्राप्त की जाए । क्योंकि जिस प्रकार माघ मेले में राजनीति का विस्तार हो रहा उसमें मुझे धार्मिकता के बढ़ने की उम्मीद नहीं नजर आती है लोग भले ही माघ मेला धार्मिक उद्देश्य और मोक्ष प्राप्ति के लालच में आते हो लेकिन इस आयोजन में उन्हें ऐसे राजनीतिक पाश में बंधा जाता है कि उन्हें अंदाजा भी न होगा। प्रश्न यह नहीं कि माघ मेले राजनीति क्यों हो रही है भारत के इतिहास में धर्म और राजनीति का गहरा संबंध था भारत के किसी भी धार्मिक आयोजन में राजनीति की उपस्थिति स्वाभाविक मानी जाती है लेकिन प्रश्न यह है कि जो मेला धार्मिक उद्देश से लगता था वह मेला राजनीतिक उद्देश्य की ओर क्यों झुकता चला जा रहा? मेरे लिए यह अंदाजा लगाना तनिक भी कठिन नहीं की आज माघ मेले में धर्म से ज्यादा अनुपात में राजनीति मौजूद है। भले ही यह स्पष्ट दिखाई न दे। "इसी संदर्भ में बसपा की अध्यक्ष मायावती ने कहा कि पिछले वर्षों में धार्मिक आयोजनों में राजनीतिक हस्तक्षेप बढ़ा है जिससे सामाजिक तनाव और विवाद पैदा हो रहे"[8]

माघ मेले में राजनीति के निम्नलिखित दो स्वरूप हो सकते है –

1. **नकारात्मक संभावनाएं-** यदि माघ मेले में बढ़ती राजनीति में अंकुश न लगाया गया तो धार्मिक आयोजन का मूल आधार नष्ट हो जायेगा जिसका भारत की धार्मिक और राजनीति संबंध पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, धार्मिक आयोजन में अधिक हस्तक्षेप के कारण जहां सरकार जनसमूह का सकारात्मक पक्ष हासिल करना चाहती वही उसे विरोध का सामना करना पड़ सकता है, भारतीय लोकतंत्र की छवि विश्व में धर्म निरपेक्ष राज्य के रूप विद्यमान है राजनीति का धर्म में इस प्रकार की भागीदारी विश्व में भारत की छवि पर खतरा बन सकती है, माघ में राज्य तथा केंद्र सरकार की सक्रिय भूमिका देश में धार्मिक राजनीति को बढ़ावा देता है जिससे धार्मिक विभाजन की संभावना बढ़ सकती है ।
2. **सकारात्मक संभावनाएं-** मेरे दृष्टिकोण में राजनीतिक इच्छा शक्ति के कारण, सड़क, परिवहन, स्वच्छता, स्वास्थ सुविधा, सुरक्षा व्यवस्था में सुधार की संभावना बढ़ जाती हैं क्योंकि इन्हीं सुविधाओं से लोग आकर्षित होते हैं, इसके अलावा भी सरकार द्वारा माघ मेले में माघ मेला ऐप, डिजिटल लेन देन, माघ मेला QR कोड, ड्रोन के माध्यम से निगरानी व्यवस्था आदि तकनीकी व्यवस्था भी लागू हो सकती जिससे लोगों को कई तरह की सुविधा प्राप्त हो सकती है, इसी क्रम में राजनीतिक व्यक्तियों द्वारा माघ मेला का प्रचार विश्व आकर्षण का केंद्र बन सकता है जिससे भारत की संस्कृति पहचान बढ़ सकती है।

निष्कर्ष-

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि माघ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं रह गया है। बदलते परिवेश में राजनीति का माघ मेले में समावेश बढ़ता जा रहा है। ऐतिहासिक रूप में माघ मेला आध्यात्मिक शुद्धि, धार्मिक अनुष्ठान तथा सांस्कृतिक आयोजन के लिए प्रसिद्ध था परंतु समकालीन भारत में इसका स्वरूप अधिक बहुयामी हो गया, कही इस पवित्र मेले का प्रयोग सत्ता प्राप्ति के लिए कही चुनाव जीतने के लिए कही चुनाव जीतने के लिए तो कही विपक्ष पर निशाना लगाने के लिए किया जाने लगा। लोकतांत्रिक राजनीति, जनसमूह की बढ़ती भूमिका और मीडिया की सक्रियता ने कुंभ मेले को एक ऐसे सार्वजनिक क्षेत्र में परिवर्तित किया जहां धर्म, शासन और राजनीति एक दूसरे से जुड़ते दिखाई देते हैं। राजनीतिक दृष्टि से कुंभ मेला जन संप्रेषण और वैचारिक प्रस्तुति का भी माध्यम बन गया है। धार्मिक प्रतीकों तथा सांस्कृतिक के प्रति अपना झुकाव और विचार व्यक्त कर राजनीतिक दल जन समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करते का प्रयास करते हैं। यही द्वंद कुंभ मेले भारतीय राजनीति का एक संवेदनशील किंतु प्रभावशाली आयाम बनता है।

अतः अंत में कहा जा सकता है कि माघ मेला आधुनिक भारत में आस्था, सत्ता और राजनीति का जीवंत संगम है। यह संगम न तो केवल नकारात्मक है और न केवल सकारात्मक बल्कि यह संगम है। भविष्य में माघ मेले का महत्व इसी संतुलन पर निर्भर करेगा कि आस्था की पवित्रता, सत्ता की जिम्मेदारी और राजनीति की मर्यादा किस प्रकार एक दूसरे के साथ समन्वय स्थापित करती हैं।

संदर्भ सूची

[1]. Mehrotra Rahul 2013. "Kumbh Mela: Mapping the Ephemeral Megacity" 2013, Niyogi books Publication, Page No. 30 to 40

[2]. Chaudhary Roy, 9 Jan 2025. "How Kumbh Mela because a platform for Nationalism during Independence movement", The Indian express.

[3]. Christophe Jaffrelot, 2011. "Religion caste and politics in India", Oxford University press, Page No 243-245

[4]. Chaudhary Roy, 9 Jan 2025. "How Kumbh became the platform for Nationalism during Independence movement, The Indian express

[5]. Chaubey P.K, 2025. "The role of government and Media in the organization of Maha Kumbh" international journal of Ayurveda medicine, Page No 35 – 37

[6]. Yadav Yogendra 2014 "Making sense of India democracy" , New Delhi Penguin Indian, Page No. 89 – 92

[7]. "Over 22 cr Devotees Create historic record at Mangh Mela", The times of India, Prayagraj Edition 2026

[8]. "Political interference in religious events fueling social tension", Mayavati, 24 Jan 2026, Hindustan Times (Magazine)

Cite this Article:

शुभी शुक्ला (2026). माघ मेला: आस्था, सत्ता और राजनीति का संगम. Kalakankar International Journal of Multidisciplinary Research, 1(1), 27–30.

Journal URL: *https://kijmr.com/*

Disclaimer and Publisher's Note: *The views, interpretations, and conclusions expressed in this article are entirely those of the author(s). The publisher and editors do not accept responsibility for any inaccuracies, copyright infringements, legal claims, or losses resulting from the publication or use of this content.*